संपूर्ण भारत के लिए एक प्रकाशन

दैनिक घटती घटना

RNI Reg.No.-CHHHIN/2004/15050
Postal Reg.No.-13/Surguja DN/2023-2025

Www.ghatatighatana.com

Ghatatighatana11@gmail.com

अम्बिकापुर,वर्ष 20,अंक -293 रविवार ,25 अगस्त 2024 , पृष्ठ - 8+8 मूल्य 4 रूपये

कलम बद्ध कलम बद्ध कलम बद्ध कलम बद्ध कलम बद्ध कलम बद्ध कलम बद्ध कलम बद्ध

छत्तीसगढ़ सरकार 36 घंटे भी नहीं दिए

और उजाड़ दिया आशियाना

अब तो बताईए मुख्यमंत्री जी...क्या छापे ?

पर इंकलाब होता रहेगा इंसाफ तक...

कलम बंद का 54 वां दिन

क्या प्रदेश के स्वास्थ्य मंत्री के लिए पूरे प्रदेश के लोगों से ऊपर उनके भतीजे हैं ?

» छत्तीसगढ़ की विष्णुदेव साय सरकार क्या गैर संवेदनशील सरकार है...?

» सरकार को कमियां ना दिखाएं तो क्या दिखाएं...?

» क्या विष्णुदेव साय सरकार बेहतर चल रही है...सिर्फ यह बात आईएएस लॉबी को पता है...आम जनता को नहीं है जानकारी...?

» किसी का दिव्यांग प्रमाण-पत्र फर्जी वह करता है मंत्री के घर मनमर्जी, दिव्यांग मांग रहे अधिकार क्या उन्हे दोगे न्याय प्रदेश के कर्णधार?

» क्या फर्जी दिव्यांग और फर्जी डिग्री के आधार पर जो कर रहे नौकरी उन्हे होगी जेल...उन्हें मिल सकेगा संकल्प पत्र अनुसार दण्ड...?

स्वास्थ्य मंत्री ने पत्रकारों को संरक्षण देने की बात कही...वहीं दूसरी तरफ भ्रष्टाचार पर जनसंपर्क अधिकारी को

आगे कर समाचार-पत्र पर दबाव बनाने का कर रहे वह काम...ये कैसा संरक्षण?

कैसे पत्रकारों को मिलेगी सुरक्षा...कैसे समाचार-पत्र रह सकेंगे निष्पक्ष...

जब उन्हे सच लिखने पर मिलेगी सजा?

तुगलकी फरमान के विरूद्ध कलमबंद अभियान...

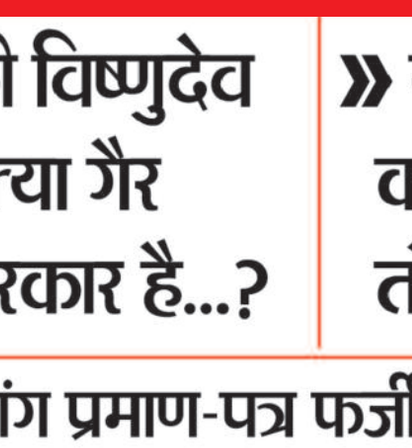

छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री के विभाग जनसंपर्क के द्वारा स्वास्थ्य मंत्री

श्री श्यामबिहारी जायसवाल

के विभाग से संबंधित समाचारों के प्रकाशन पर जनसंपर्क संचनालय के आयुक्त सह संचालक आईपीएस

श्री मयंक श्रीवास्तव

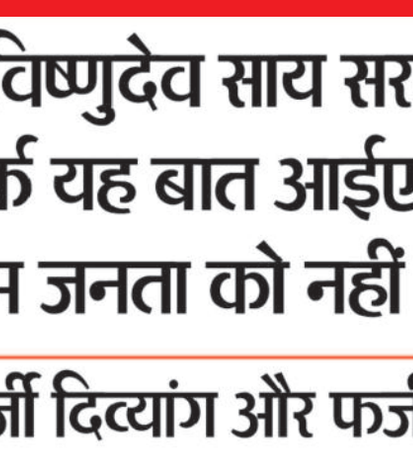

के मौखिक आदेश पर घटती-घटना के शासकीय विज्ञापन पर रोक लगाकर दबाव बनाने से लोकतंत्र के चौथे स्तंभ के मूलभूत हक पर कुठाराघात के विरूद्ध कलमबंद अभियान...प्रशासनिक अत्याचार झेलने के बावजूद है जारी ...

घटती-घटना के स्नेही पाठकों,विज्ञापनदाताओं एवं शुभचिंतकों को हो रही असुविधा के लिए खेद है...

संपादक :- अविनाश कुमार सिंह

छत्तीसगढ़ के राज्यपाल महामहिम श्री रेमन डेका से हस्तक्षेप की मांग...

क्या छापें आयुक्त सहसंचालक आईपीएस मयंक श्रीवास्तव साहब?

स्पष्ट कीजिए माननीय प्रधानमंत्री जी,स्पष्ट कीजिए माननीय मुख्यमंत्री जी छत्तीसगढ़ शासन,स्पष्ट कीजिए माननीय स्वास्थ्य मंत्री जी छत्तीसगढ़ शासन...गृहमंत्री जी,भारत सरकार क्या छत्तीसगढ़ में भ्रष्टाचार को लेकर खबर प्रकाशन पर होगी समाचार पत्र पर कार्यवाही ?

क्या छापें माननीय मुख्यमंत्री जी ?

क्या छापें स्वास्थ्य मंत्री श्याम बिहारी जी...

तुगलकी फरमान के विरूद्ध कलमबंद अभियान...

छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री के विभाग जनसंपर्क के द्वारा स्वास्थ्य मंत्री श्री श्यामबिहारी जायसवाल के विभाग से संबंधित समाचारों के प्रकाशन पर जनसंपर्क संचनालय के आयुक्त सह संचालक आईपीएस श्री मयंक श्रीवास्तव के मौखिक आदेश पर घटती-घटना के शासकीय विज्ञापन पर रोक लगाकर दबाव बनाने से लोकतंत्र के चौथे स्तंभ के मूलभूत हक पर कुठाराघात के विरूद्ध कलमबंद अभियान...?

कलम बंद...का 54 वां दिन

?

कलम बंद...का 54 वां दिन

समाचार पत्र में छपे समाचार एवं लेखों पर सम्पादक की सहमति आवश्यक नहीं है। हमारा ध्येय तथ्यों के आधार पर सटिक खबरें प्रकाशित करना है न कि किसी की भावनाओं को ठेस पहुंचाना। सभी विवादों का निपटारा अम्बिकापुर न्यायालय के अधीन होगा।

घटती-घटना के स्नेही पाठकों,विज्ञापनदाताओं एवं शुभचिंतकों को हो रही असुविधा के लिए खेद है...

संपादक :- अविनाश कुमार सिंह

C M Y K

मुख्य चिकित्सा एवं स्वाथ्य अधिकारी बड़े या प्रभारी साथ ही संविदा नौकरी वाले जिला कार्यक्रम अधिकारी ?

» सुपर प्रभारी डीपीएम सूरजपुर...सिर्फ इतनी दूर निर्देश देने गए थे... या फिर कोई सार्थक काम भी हुआ है...?

» क्या सुपर डीपीएम...सूरजपुर के नए-नवेले मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी को भी अपने गिरफ्त में करने का कर रहे प्रयास...

» निरीक्षण के दौरान... सूरजपुर सीएमएचओ चुप देखे गए...पर सुपर प्रभावी डीपीएम निर्देश देते गए...

मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी के साथ सुपर प्रभारी डीपीएम निरीक्षण व दिशा निर्देश देने गए थे या फिर रास्ते में पड़ने वाले पुलियों पर फोटो खिंचवाने ?

निरीक्षण करने पहुंचे सीएमएचओ...लेकिन दिशा-निर्देश देते दिखे सुपर प्रभारी डीपीएम...

-रवि सिंह-

सुरजपुर,24 अगस्त 2024 (घटती-घटना)। प्रदेश में स्वास्थ्य व्यवस्था का हाल क्या है यह किसी से छिपा नहीं है...वहीं किस तरह स्वास्थ्य विभाग में पद की बोली लग रही है...यह भी बात लगातार सामने आ रही है...वहीं स्वास्थ्य विभाग में किस तरह मुख्य पदों पर बैठे लोगों को प्रभाव के बल पर कुछ लोग कैसे अपने इशारों पर चला रहे हैं...यह भी देखने को मिल रहा है। खासकर कोरिया जिले सहित सूरजपुर जिले में तो एक संविदा प्रभारी स्वास्थ्य अधिकारी जिसकी अहर्ता ही फर्जी बताई जाती है। वह इस तरह स्वास्थ्य विभाग के अधिकारियों पर हावी है या इस तरह दोनों जिले के स्वास्थ्य व्यवस्था को अपनी गिरफ्त में लेकर चल रहा है की क्या कहें। कौन किस पद पर काम करेगा...कौन हटाया जायेगा...और किसे कौन सी जिम्मेदारी दी जाएगी...यह वही तय कर रहा है। सुरजपुर का प्रभारी डीपीएम कोरिया सहित सूरजपुर जिले के स्वास्थ्य विभाग को दीमक बनकर चट करने में लगा है...कोरिया जिले को तो वह कांग्रेस शासनकाल में ही चट कर चुका है... वहीं अब वह सूरजपुर सहित कोरिया जिले को चट करने में लगा है...और उसी की मंशा से दोनों जिले में स्वास्थ्य अधिकारी तैनात किए गए हैं क्योंकि कोरिया जिले की उसकी जांच जो उसकी अनियमितताओं की जांच है... वह हो न सके...वहीं सुरजपुर जिले में वह मरीजों को मिलने वाली सुविधा से अपनी जेब भर सके।

बता दें कि कोरिया में हाल में ही पदस्थ किए गए सीएमएचओ और सिविल सर्जन को लेकर यह बात सामने आई है कि सिविल सर्जन जहां काफी जूनियर हैं जिले के जिला चिकित्सालय के चिकित्सकों से वहीं सीएमएचओ जो कि विदेश से डिग्री प्राप्त किए हैं...जैसा बताया जा रहा है। सूत्रों के द्वारा उन्हें भी जुगाड और कीमत चुकाकर ही यह पद मिला है जबकि इस पद पर पहला अधिकार देश में अपनी योग्यता के आधार पर पढ़कर डॉक्टर बनने वालों को मिलना चहिए। वैसे सूरजपुर के प्रभारी डीपीएम खुद फर्जी डिग्री वाले हैं ऐसी शिकायत है,और यह सत्य है...ऐसा दावा है..लेकिन फर्जी व्यक्ति पर कार्यवाही इसलिए नहीं हो रही है क्योंकि वह स्वास्थ्य मंत्री का भतीजा है...और उसे दीमक का गुण है...कि कैसे आम लोगों के हक को इलाज के हक को मारा जा सके।

हाल ही में सीएमएचओ सुरजपुर और प्रभारी डीपीएम सूरजपुर का एक दौरा कार्यक्रम सुर्खियां बटोर रहा है जिसमे फर्जी डिग्री वाला प्रभारी संविदा पद वाला व्यक्ति सीएमएचओ की उपस्थिति में खुद निर्देश जारी कर रहा है। बांक जो जिले का दूरस्थ क्षेत्र है जिसे पर्यटन के लिए भी जाना जाता है वहीं पहुंचे थे दोनो जहां सीएमएचओ मौन नजर आए...और प्रभारी संविदा अधिकारी डीपीएम निर्देश जारी करते देखे गए...वैसे ऐसा इसलिए हो रहा है क्योंकि प्रभारी डीपीएम स्वास्थ्य मंत्री के भतीजे हैं...और उन्हें कोई निर्देश जारी कर नहीं सकता...वहीं वह जिले के सबसे वरिष्ठ अधिकारियों को भी निर्देश जारी करते हैं और उन्हें फर्जी डिग्री के आधार पर नौकरी करने का भय भी नहीं है। वैसे जहां निरीक्षण करने पहुंचे थे दोनों वह क्षेत्र पर्यटन का क्षेत्र है और इसलिए जाना भी हुआ वहां दोनों का साथ ही डीपीएम ने रास्ते भर खूब फोटो भी खिंचवाई है और जिसे वह स्टेट्स पर लगाना भी नहीं भूले। बताया जा रहा है की बांक पिकनिक मनाना ही मुख्य उद्देश्य था साथ ही निरीक्षण का भी एक उन्होंने फॉरमेल्टी पूरी कर ली। प्रभारी फर्जी डिग्री वाले संविदा डीपीएम सूरजपुर सीएमएचओ को अपनी गिरफ्त में लेने का भरसक प्रयास जारी रखे हुए हैं वहीं स्वास्थ्य मंत्री का भतीजा बनकर वह इसमें सफल भी हो रहे हैं। बता दें कि फर्जी डिग्री वाले प्रभारी डीपीएम अब यह भी कहते सुने जा रहे हैं...कि प्रदेश में उनके चाचा के स्वास्थ्य मंत्री रहते हुए उन्हें या उनकी डिग्री को कोई चैलेंज नहीं कर सकता...साथ ही उनके विरुद्ध किसी जांच में कोई कुछ नहीं कर सकता...क्योंकि वह जो चाहेंगे वही होगा...। एन एच एम अंतर्गत होने वाली भर्तियों में कोरिया जिले सहित सूरजपुर जिले में यह भारी भ्रष्टाचार की तैयारी में है यह भी बात सामने आ रही है जिसके लिए वसूली शुरू भी कर दी है इसने।

निरीक्षण के दौरान... प्रभारी डीपीएम बैठे मुख्य कुर्सी पर...सीएमएचओ देखे गए खड़े...

निरीक्षण के दौरान प्रभारी डीपीएम संविदा फर्जी डिग्री धारी सूरजपुर कुर्सी पर बैठे देखे गए...वहीं सीएमएचओ खड़े नजर आए... सीएमएचओ का खड़े रहना और डीपीएम का बैठे रहना यह साबित कर गया कि स्वास्थ्य मंत्री का भतीजा होने के कारण वही सीएमएचओ भी है। यह बात अलग है कि पद पर कोई और है। सीएमएचओ डीपीएम के सामने निरीह हैं यह भी साबित हुआ और वह नाममात्र के ही स्वास्थ्य अधिकारी हैं...।

बिना अनुमति...निजी कार्यों से जिले से हो जाते हैं बाहर डीपीएम...

फर्जी डिग्री से सहारे स्वास्थ्य मंत्री का भतीजा होने के मात्र कारण स्वास्थ्य विभाग में बड़े पद पर कार्य करने के आरोप के बावजूद कोई कार्यवाही नहीं होने को लेकर प्रभारी डीपीएम सूरजपुर का दम पूरे प्रदेश की जनता देख रही है कि किस तरह मेहनत से डॉक्टरी पढ़ने वाले निजी क्लीनिकों मे काम करने मजबूर हैं वहीं फर्जी डिग्री वाला सीना ठोक कर सरकारी नौकरी कर रहा है और वहां भी केवल भ्रष्टाचार उसका मुख्य पेशा है। सूत्रों की मानें तो सूरजपुर का प्रभारी डीपीएम कभी भी ड्यूटी टाइम में जिले से बाहर चला जाता है और ज्यादातर वह राजनीतिज्ञों सहित नौकरशाहों से मिलने जाता है। वह नियम कायदों की धज्जियां उड़ाता प्रतिदिन नजर आता है।

सूरजपुर से लेकर कोरिया तक के सीएमएचओ... इनके गिरफ्त में...?

सुरजपुर सहित कोरिया जिले के सीएमएचओ फर्जी डिग्री के आरोप वाले प्रभारी डीपीएम की गिरफ्त में हैं। दोनों ही उसके लिए मात्र जिम्मेदार हैं न की जिले की जनता के लिए यह बताया जाता है दोनों उसे ही या उसके ही निर्देश पर काम करते हैं।

रसिया रिटर्न डॉक्टर के हाथ जिला चिकित्सालय व जिले के स्वास्थ्य व्यवस्था की जिम्मेदारी

कोरिया जिले में तो ऐसे डॉक्टर को सीएमएचओ बनाया गया है जो रसिया से पढ़कर आया है, वैसे देखा जाए तो जिले के अन्य योग्य डॉक्टर को यह जिम्मेदारी दी जा सकती थी लेकिन ऐसा न करते हुए विदेशी धरती से पेमेंट सीट से पढ़ाई करने वाले को जिम्मेदारी दी गई है जिसका की असर गलत पड़ेगा अन्य चिकित्सक जो भारत से योग्यता से डॉक्टर बने हैं उनका मनोबल गिरेगा।

क्या निरीक्षण बहाना था... सैर-सपाटा करना था उद्देश्य...?

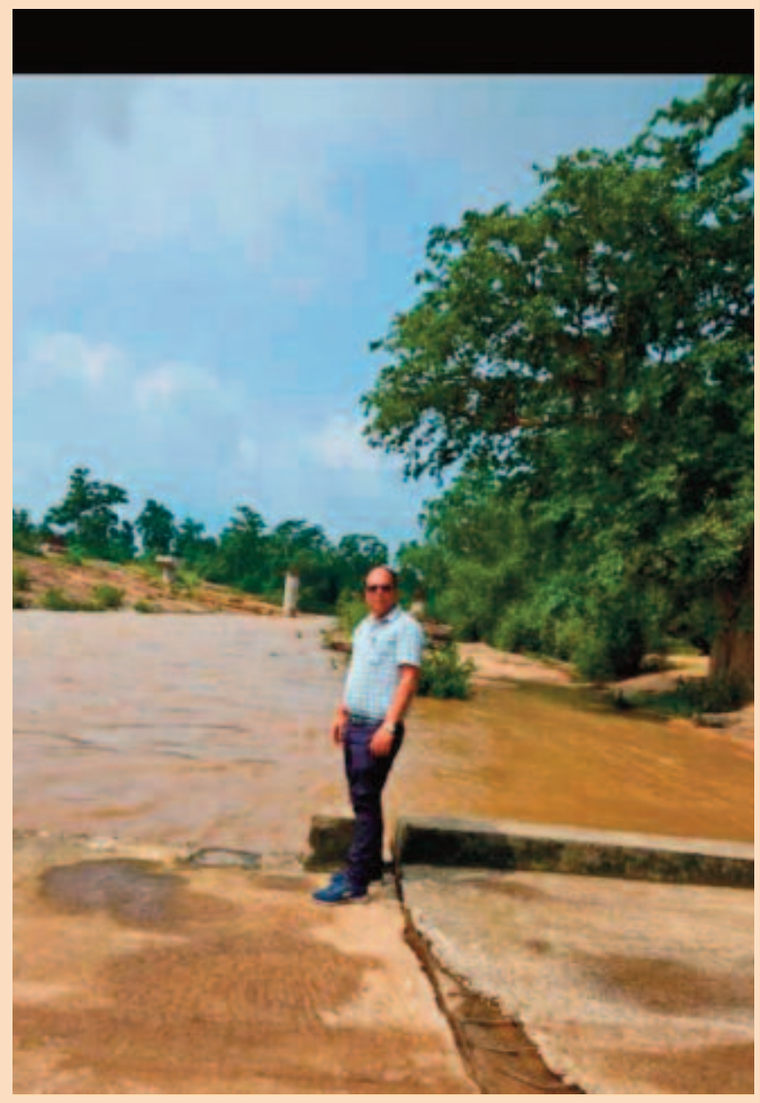

सीएमएचओ सूरजपुर साथ ही फर्जी डिग्री वाले जैसा आरोप है प्रभारी संविदा डीपीएम जिले के दूरस्थ क्षेत्र वनांचल क्षेत्र बांक पहुंचे थे और जहां उन्होंने निरीक्षण किया ग्रामीण स्वास्थ्य व्यवस्था का...वैसे जिस तरह सोशल मीडिया में डीपीएम ने स्टेट्स सेट किया उसको देखकर यह भी कहा जा रहा है कि निरीक्षण बहाना था मुख्य उद्देश्य बांक क्षेत्र में सैर सपाटा करना था जो पिकनिक स्पॉट है।

घटती-घटना के स्नेही पाठकों,विज्ञापनदाताओं एवं शुभचिंतकों को हो रही असुविधा के लिए खेद है...

संपादक :- अविनाश कुमार सिंह

खुला पत्र

देश के माननीय प्रधानमंत्री से भी सवाल...क्या भ्रष्टाचार के विरुद्ध छत्तीसगढ़ की प्रदेश सरकार के खिलाफ समाचार लिखना है अपराध ?

अम्बिकापुर,24 अगस्त 2024 (घटती-घटना)। माननीय मुख्यमंत्री से भी सवाल है...छत्तीसगढ़ में आपकी सरकार है...केंद्र में भी आपकी पार्टी की सरकार है...पर छत्तीसगढ़ में लोकतंत्र के चौथे स्तंभ को कमियां दिखाने से रोकने का भी प्रयास हो रहा है...यह प्रयास कहीं ना कहीं स्वस्थ लोकतंत्र को कमजोर करने का प्रयास है...जहां पर भाजपा सरकार से लोगों को बेहतर करने की उम्मीद होती है तो वहीं पर छत्तीसगढ़ में नवनिर्वाचित मंत्री,विधायक बे-लगाम हो चुके हैं...उन्हें जो जिम्मेदारी मिली है उसे जिम्मेदारी को निभाने में असमर्थ दिख रहे हैं...उनकी कमियों को बताना उन्हें रास नहीं आ रहा इसलिए वह पत्रकार,संपादक का कलम बंद करने का प्रयास कर रहे हैं अब इस पर आप ही संज्ञान ले...और बताएं की संपादक व पत्रकार कौन सी खबर प्रकाशित करें ?

क्या छापें माननीय मुख्यमंत्री जी ?

कलम बंद...का 54 वां दिन

कलम बंद...का 54 वां दिन

घटती-घटना के स्नेही पाठकों,विज्ञापनदाताओं एवं शुभचिंतकों को हो रही असुविधा के लिए खेद है...

संपादक :- अविनाश कुमार सिंह

CMYK

खुला पत्र

भारत में सच्चे पत्रकार को राजनीतिक पार्टियों से खतरा क्यों रहता है ?

अम्बिकापुर,24 अगस्त 2024(घटती-घटना)। भारत अपने पत्रकारों को निडर होकर काम करने का स्वतंत्र तरीका प्रदान करने में बहुत पीछे है...इन दिनों...कुछ को छोड़कर...हर दूसरा पत्रकार वही खबर दे रहा है जो सरकार की प्रशंसा करती है...नए चैनल लोगों को सरकार द्वारा की गई गलती से विचलित करने के लिए विभिन्न विषयों पर अनावश्यक बहस दिखाएंगे...इसके कारण,अधिक महत्वपूर्ण मुद्दे हैं जो किसी का ध्यान नहीं जाता हैं...दूसरा कारण यह है कि पत्रकार अपने सिद्धांतों और मूल्यों को खो रहे हैं क्योंकि आज स्थिति ऐसी है कि स्थापना के खिलाफ विषयों पर बोलने या लिखने वाले पत्रकारों को धमकी देना,गाली देना और मारना कई अन्य देशों की तरह भारत में भी एक वास्तविकता बन गई है...देश और दुनिया को डरा दिया है...वहीं,पत्रकारों पर लगातार हो रहे हमलों की घटनाओं ने एक बार फिर उन्हें सुर्खियों में ला दिया है...जो पत्रकार देश और उसके आम नागरिकों के लिए लिखे वे मरे या प्रताड़ित हुए सरकारी तंत्रों के द्वारा...!

क्या छापें माननीय मुख्यमंत्री जी ?

कलम बंद...का 54 वां दिन

?

कलम बंद...का 54 वां दिन

घटती-घटना के स्नेही पाठकों,विज्ञापनदाताओं एवं शुभचिंतकों को हो रही असुविधा के लिए खेद है...

संपादक :- अविनाश कुमार सिंह

खुला पत्र

क्या भ्रष्टाचार का मामला वहीं होगा दर्ज जहां होगी भाजपा से इतर दल की सरकार ?

- भ्रष्टाचार की खबरों से दिक्कत...
- कमी दिखाओ तो दिक्कत...
- जनता की परेशानियों को दिखाओ तो दिक्कत...

अम्बिकापुर ,24 अगस्त 2024(घटती-घटना)। आखिर लोकतंत्र का चौथा स्तंभ करें तो क्या करें ? सरकारी तंत्र भ्रष्टाचार की ओर बढ़ रहे भ्रष्टाचार को उजागर करने पत्रकार दौड़ रहा पर पत्रकार की दौड़ के पीछे निर्वाचित जनप्रतिनिधि उसकी दौड़ की गति को कम करने का प्रयास कर रहे हैं,भ्रष्टाचार बढ़ता रहे पर पत्रकार ना दिखाएं क्या यही चाहता है जनप्रतिनिधि या फिर सरकारी तंत्र।

क्या छापें माननीय मुख्यमंत्री जी ?

कलम बंद...का 54 वां दिन

कलम बंद...का 54 वां दिन

घटती-घटना के स्नेही पाठकों,विज्ञापनदाताओं एवं शुभचिंतकों को हो रही असुविधा के लिए खेद है...

संपादक :- अविनाश कुमार सिंह

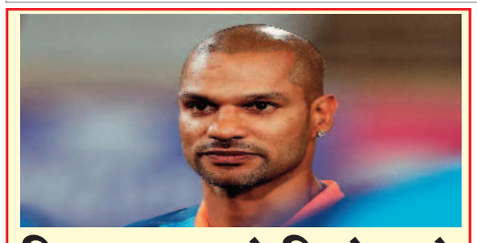

शिखर धवन ने क्रिकेट से संन्यास की घोषणा की

नई दिल्ली,24 अगस्त 2024। भारत के अनुभवी सलामी बल्लेबाज शिखर धवन ने क्रिकेट के सभी प्रारूपों से संन्यास की घोषणा की है। धवन (38) ने कहा कि उन्होंने 2010 में विशाखापत्तनम में ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ एकदिवसीय मैच से अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में पदार्पण करने के बाद से सभी तीन प्रारूपों में राष्ट्रीय टीम का प्रतिनिधित्व किया है और वह एक संतुष्ट व्यक्ति के रूप में संन्यास ले रहे हैं। धवन ने सोशल मीडिया मंच 'एक्स' पर लिखा, ''मैं अपनी क्रिकेट यात्रा का यह अध्याय समाप्त कर रहा हूं लेकिन मेरे साथ अनगिनत यादें हैं और मैं बहुत आभारी हूं। प्यार और समर्थन के लिए धन्यवाद। जय हिंद।''उन्होंने कहा, ''जीवन में आगे बढ़ने के लिए पन्ने पलटना जरूरी है और इसलिए मैं अंतरराष्ट्रीय और घरेलू क्रिकेट से संन्यास की घोषणा कर रहा हूं। मैं अपने दिल में इस सुकून के साथ संन्यास ले रहा हूं कि मैंने भारत के लिए इतने लंबे समय तक क्रिकेट खेला।''

पाकिस्तान की धरती पर मुशफिकुर ने रचा इतिहास

» बांग्लादेश के टेस्ट इतिहास में पहली बार हुआ ऐसा

रावलपिंडी,24 अगस्त 2024। पाकिस्तान और बांग्लादेश के बीच खेले जा रहे पहले टेस्ट में विकेटकीपर-बल्लेबाज शानदार लय में नजर आ रहे हैं। पहले पाकिस्तान के विकेटकीपर मोहम्मद रिजवान ने शानदार शतक जड़ते हुए कई कीर्तिमान रच दिए और अब बांग्लादेश के विकेटकीपर मुशफिकुर रहीम ने धमाकेदार शतक ठोकते हुए इतिहास रच दिया है। रावलपिंडी टेस्ट के चौथे दिन मुशफिकुर रहीम ने पाकिस्तानी गेंदबाजों की जमकर धुनाई करते हुए शानदार शतक जड़ा।

उन्होंने पाकिस्तान की खतरनाक तेज गेंदबाजी के खिलाफ 200 गेंदों का सामना करते हुए टेस्ट क्रिकेट में अपना 11वां शतक जड़ा। इस तरह वह टेस्ट क्रिकेट में पाकिस्तान के खिलाफ शतक बनाने वाले तीसरे बांग्लादेशी बल्लेबाज बन गए। इससे पहले जावेद उमर ने साल 2003 में पेशावर टेस्ट में और हबीबुल बशर ने इसी साल कराची टेस्ट में शतक लगाने का कमाल किया था।

रहीम ने रचा अनोखा कीर्तिमान

रहीम शतक बनाने के बाद भी नहीं थमे और 286 गेंदों पर 150 रन भी पूरे कर लिए। इसके साथ ही रहीम ने नया कीर्तिमान रच दिया। वह पाकिस्तान की धरती पर टेस्ट क्रिकेट में 150 रन बनाने वाले पहले बांग्लादेशी बल्लेबाज बन गए हैं। इससे पहले ये रिकॉर्ड जावेद उमर के नाम था जिन्होंने पेशावर में 119 रनों की पारी खेली थी।

टेस्ट में पाकिस्तान की धरती पर बांग्लादेशी बल्लेबाज का सर्वोच्च स्कोर

150* - मुशफिकुर रहीम, रावलपिंडी, 2024
119 - जावेद उमर, पेशावर, 2003
108 - हबीबुल बशर, कराची, 2003

मुशफिकुर रहीम इस शतक की बदौलत बांग्लादेश के लिए टेस्ट में दूसरे सबसे ज्यादा टेस्ट शतक लगाने वाले बल्लेबाज बन गए हैं। उन्होंने तमीम इकबाल को पीछे छोड़ा। बांग्लादेश के लिए सबसे ज्यादा टेस्ट शतक ठोकने का रिकॉर्ड मोमिनुल हक के नाम हैं जिन्होंने 115 पारियों में 12 सैकड़े जमाए थे। यही नहीं, रहीम अब बांग्लादेश के लिए विदेशी सरजमीं पर टेस्ट में सबसे ज्यादा शतक लगाने वाले बल्लेबाज बन गए हैं।

टेस्ट मैचों में बांग्लादेश के लिए सबसे ज़्यादा शतक

12 - मोमिनुल हक (115 इनिंग्स)
11 - मुशफिकुर रहीम (164 इनिंग्स)
10 - तमीम इकबाल (134 इनिंग्स)
6 - मोहम्मद अशरफुल (119 इनिंग्स)

यही नहीं, बांग्लादेश के इस विकेटकीपर-बल्लेबाज ने शानदार शतक के दम पर इंटरनेशनल क्रिकेट में अपने 15 हजार रन भी पूरे कर लिए हैं। ऐसा करने वाले वह दूसरे बांग्लादेशी बल्लेबाज हैं। इससे पहले ये कारनामा सिर्फ तमीम इकबाल ने किया था। बांग्लादेश के लिए इंटरनेशनल क्रिकेट में सबसे ज्यादा रन बनाने के रिकॉर्ड से रहीम अब सिर्फ 50 रन दूर हैं।

मैदान पर उतरते ही क्वेन मफाका ने रचा इतिहास

» 25 साल पुराने रिकॉर्ड को किया चकनाचूर

क्यूबा,24 अगस्त 2024। साउथ अफ्रीका की टीम ने वेस्टइंडीज के खिलाफ तीन मैचों की टी20 सीरीज के पहले मुकाबले के लिए अपनी प्लेइंग 11 में बाएं हाथ के युवा तेज गेंदबाज क्वेन मफाका को भी शामिल किया। मफाका का ये इंटरनेशनल क्रिकेट में पहला मुकाबला था जिसमें उन्होंने कदम रखते ही एक बड़ा रिकॉर्ड अपने नाम करने के साथ 25 साल पुराने कीर्तिमान को भी तोड़ दिया। क्वेना मफाका अब साउथ अफ्रीका की तरफ से इंटरनेशनल क्रिकेट के किसी भी फॉर्मेट में डेब्यू करने वाले सबसे युवा खिलाड़ी बन गए हैं।

क्वेन मफाका ने 18 साल 137 दिन की उम्र में इंटरनेशनल फॉर्मेट में अपना पहला मुकाबला खेला। वहीं इससे पहले ये रिकॉर्ड साउथ अफ्रीका की तरफ से साल 1999 में 5 फरवरी को वेस्टइंडीज के खिलाफ

अपना पहला मुकाबला खेलने फेयनो विक्टर के नाम पर था जिन्होंने 18 साल 314 की उम्र में इंटरनेशनल क्रिकेट में डेब्यू किया था। मफाका को उनके डेब्यू मैच की कैप साउथ अफ्रीकी टीम के अनुभवी तेज गेंदबाज लुंगी एन्गीडी ने दी। मफाका ने अपने डेब्यू मैच में 3.5 ओवर्स की गेंदबाजी करने के साथ 25 रन दिए और एक विकेट भी हासिल किया। हालांकि इसके बावजूद साउथ अफ्रीकी टीम को इस पहले मुकाबले में वेस्टइंडीज के खिलाफ 7 विकेट से हार का सामना करना पड़ा।

आईपीएल में क्वेना डेब्यू करने वाले बने थे तीसरे सबसे युवा विदेशी खिलाड़ी बने थे

क्वेना मफाका उस समय चर्चा में आए थे जब उन्होंने साल 2024 की शुरुआत में हुए अंडर-19 वर्ल्ड कप में शानदार प्रदर्शन करते हुए प्लेयर ऑफ द टूर्नामेंट का खिताब जीता था। इसके बाद उन्हें आईपीएल 2024 के सीजन में हार्दिक पांड्या की कप्तानी में मुंबई इंडियंस की टीम से खेलने का मौका मिला था। मफाका ने आईपीएल में 17 साल 354 दिन की उम्र में डेब्यू किया था और वह आईपीएल इतिहास में डेब्यू करने वाले तीसरे सबसे कम उम्र के विदेशी खिलाड़ी बने थे। हालांकि मफाका का पहला आईपीएल सीजन कुछ खास नहीं रहा था और उन्हें सिर्फ 2 मैच खेलने का मौका मिला जिसमें उन्होंने एक विकेट हासिल किया था।

ऑस्ट्रेलियाई टीम को लगा बड़ा झटका

दौरे पर रवाना होने से पहले ही चोटिल हुआ मैच विनर खिलाड़ी

मेलबर्न,24 अगस्त 2024। ऑस्ट्रेलिया क्रिकेट को अगले महीने की शुरुआत में स्कॉटलैंड का दौरा करना है जहां पर वह 4 सितंबर से मेजबान टीम के खिलाफ तीन मैचों की टी20 सीरीज खेलेंगे। अब इस दौरे पर रवाना होने से पहले उन्हें एक बड़ा झटका तेज गेंदबाज जोश हेजलवुड के रूप में लगा है जो काल्फ में खिंचाव की समस्या होने की वजह से बाहर हो गए हैं। हेजलवुड को ये इंजरी पिछले हफ्ते ट्रेनिंग के दौरान हुई थी। हेजलवुड के बाहर होने के बाद क्रिकेट ऑस्ट्रेलिया की तरफ से उनकी जगह पर रिप्लेसमेंट खिलाड़ी के नाम का भी ऐलान कर दिया गया है।

बाबर आजम की गलती का शिकार बने नसीम शाह

» 18 रन बटोरकर लिटन दास ने दिखा दिए दिन में तारे

रावलपिंडी,24 अगस्त 2024। पाकिस्तान की टीम अपने घर पर बांग्लादेश के खिलाफ 2 मैचों की टेस्ट सीरीज की मेजबानी कर रही है, जिसका पहला मैच रावलपिंडी के मैदान पर खेला जा रहा है। इस मुकाबले में जहां पाकिस्तानी टीम ने अपनी पहली पारी में शानदार बल्लेबाजी प्रदर्शन करते हुए 448 के स्कोर पर उसे घोषित किया था तो वहीं उनसे अपने गेंदबाजों से बेहतर प्रदर्शन की उम्मीद थी। हालांकि तीसरे दिन के खेल में बांग्लादेश की तरफ से भी बेहतरीन बैटिंग देखने को मिली और उन्होंने दिन का खेल खत्म होने तक 5 विकेट के नुकसान पर 316 रन बना लिए थे। वहीं तीसरे दिन के खेल के आखिरी सेशन में एक अलग ही नजारा देखने को मिला जिसमें लिटन दास को बाबर

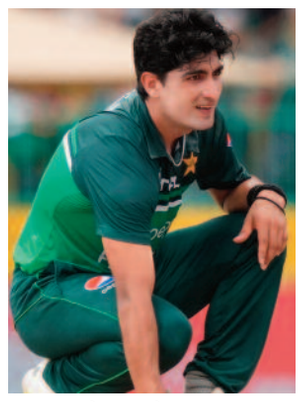

आजम स्लेज करते हुए नजर आए और इसके अगले ओवर में दास ने नसीम शाह को 18 रन कूट दिए

बाबर की गलती का खामियाजा नसीम ने भुगता

रावलपिंडी टेस्ट मैच के तीसरे दिन के आखिरी सेशन का खेल चल रहा था जिसमें दिन का खेल खत्म होने में अधिक समय नहीं बचा था। इसी दौरान बाबर आजम ने बांग्लादेश टीम की पारी के 89वें ओवर से ठीक पहले लिटन दास से आकर कुछ बात की जिसपर दास की प्रतिक्रिया चौंकाने वाली थी। इसके बाद ओवर फेंकने आए नसीम शाह के खिलाफ लिटन दास ने पहली 2 गेंदों में लगातार दो चौके लगा दिए। वहीं तीसरी गेंद डॉट रही तो वहीं चौथी गेंद पर दास ने जोरदार छक्का लगा दिया और फिर अगली गेंद पर एक और चौका लगाने के साथ कुल 18 रन बटोर लिए और अपना अर्धशतक भी पूरा किया। बांग्लादेश की तरफ से तीसरे दिन के खेल में लिटन दास के अलावा शदमान, मोमिनुल हक और मुशफिकुर रहीम के बल्ले से अर्धशतकीय पारियां देखने के को मिली।

लिटन दास 56 रन बनाकर बने नसीम शाह का शिकार

इस टेस्ट मैच के चौथे दिन का खेल जब शुरू हुआ तो तीसरे दिन 52 रन बनाकर नाबाद लौटे लिटन दास सिर्फ 4 रन बनाने के बाद नसीम शाह का ही शिकार बने।

निकोलस पूरन के तूफान में उड़ी अफीकी टीम

त्रिनिडाड,24 अगस्त 2024। वेस्टइंडीज और साउथ अफ्रीका के बीच 2 मैचों की टेस्ट सीरीज खत्म होने के बाद दोनों टीमों के बीच त्रिनिडाड के ब्रायन लारा स्टेडियम में तीन मैचों की टी 20 सीरीज का पहला मैच खेला गया। इस मुकाबले में पूरी तरह से मेजबान टीम का दबदबा देखने को मिला जिसमें साउथ अफ्रीकी टीम ने पहले बल्लेबाजी करते हुए 20 ओवर्स में 174 रनों का स्कोर तो बनाया लेकिन विंडीज टीम ने इसे बड़ी ही आसानी से 17.5 ओवर्स में 3 विकेट के नुकसान पर हासिल कर लिया। वेस्टइंडीज की तरफ से टारगेट का पीछा करते हुए निकोलस पूरन और शाई होप के बल्ले से आक्रामक अर्धशतकीय पारियां देखने को मिली।

पूरन ने लगाए 7 छक्के और खेली 65 रनों की नाबाद पारी

वेस्टइंडीज की टीम सीरीज के पहले टी20 मैच में जब 175 रनों के टारगेट का पीछा करने उतरी तो शाई होप और अलीक अथनाजे

की ओपनिंग जोड़ी ने पहले विकेट के लिए 84 रनों की साझेदारी की। अथनाजे के 30 गेंदों में 40 रन बनाकर पवेलियन लौटने के बाद बल्लेबाजी करने उतरे निकोलस पूरन ने आते ही साउथ अफ्रीकी गेंदबाजों की खबर लेनी शुरू कर दी। पूरन ने एक छोर से तेजी के साथ रन बनाने का सिलसिला जारी रखते हुए सिर्फ 26 गेंदों में 65 रनों की नाबाद पारी खेली जिसमें 7 छक्के शामिल हैं जबकि सिर्फ 2 चौके। पूरन के अलावा शाई होप ने भी 36 गेंदों में 2 चौके और 3 छक्कों की मदद से 51 रनों की बेहतरीन पारी खेली। साउथ अफ्रीका की तरफ से मैच में ओटोनिल बार्टमैन ने 2 जबकि क्वेन मफाका ने एक विकेट हासिल किया।

ट्रिस्टन स्टब्स और क्रूगर के पारी के दम पर अफीका पहुंची लड़ने लायक स्कोर तक

इस मुकाबले में साउथ अफ्रीकी टीम के बल्लेबाजी प्रदर्शन को लेकर बात की जाए तो उन्होंने एक समय 42 के स्कोर पर अपनी आधी टीम को गंवा दिया था। यहां से ट्रिस्टन स्टब्स और पैट्रिक क्रूगर ने छठे विकेट के लिए 50 गेंदों में 71 रनों की साझेदारी करने के साथ ना सिर्फ टीम की पारी को संभाला बल्कि एक लड़ने लायक स्कोर तक भी पहुंचाने में अहम भूमिका अदा की। स्टब्स के बल्ले से इस मैच में 53 गेंदों में 76 रनों की पारी देखने को मिली जिसमें 8 चौके और तीन छक्के शामिल थे। वहीं क्रूगर ने 44 रनों की पारी खेली।

बॉर्डर-गावस्कर ट्रॉफी से पहले ऑस्ट्रेलियन गेंदबाज की टीम इंडिया को वॉर्निंग,कहा-ट्रॉफी वापस पाने के लिए भूखा हूं

पर्थ,24 अगस्त 2024। बॉर्डर-गावस्कर ट्रॉफी यानी बीजीटी का आयोजन इस साल के अंत में होगा जिसमें भारत और ऑस्ट्रेलिया के बीच जबरदस्त टक्कर देखने को मिलेगी। इस सीरीज का आगाज भले ही नवंबर में होना हो लेकिन अभी से ही दोनों देशों की ओर से बयानबाजी का सिलसला देखने को मिल रहा है। इस क्रम में अब ऑस्ट्रेलियन स्पिनर नाथन लायन का बड़ा बयान आया है जिसे भारतीय फैंस बॉर्डर-गावस्कर ट्रॉफी से पहले टीम इंडिया के लिए बड़ी वॉर्निंग के रुप में देख रहे हैं। लायन ने कहा कि 10 साल से अधूरा काम बाकी है और ऑस्ट्रेलियन टीम चीजों को बदलने के लिए काफी भूखी हैं, खासकर घरेलू मैदान पर। भारत एक सुपरस्टार टीम है और

मुश्किल भी, लेकिन ऑस्ट्रेलियन टीम चीजों को बदलने के लिए बहुत बेताब हैं। लायन ने कहा कि उनकी टीम इस ट्रॉफी को किसी भी हाल में वापस से जीतना चाहेगी।

ऑस्ट्रेलिया महान टीम बनने के रास्ते पर

लायन ने कहा कि उनकी टीम में ऐसे कई खिलाड़ी हैं जिन्होंने भारत को कभी टेस्ट सीरीज में नहीं हराया है। उन्होंने कहा कि यह एक ऐसी चीज है जिसे वह हर हाल में करना चाहेंगे, खास तौर पर घरेलू मैदान पर। उनका मानना है कि ऑस्ट्रेलिया को अपने घर में लगभग हर सीरीज जीतनी चाहिए। हालांकि, लियोन का मानना है कि इस बार ऑस्ट्रेलिया बेहतर तरीके से तैयार है। उन्होंने कहा कि ऑस्ट्रेलिया कुछ साल पहले की तुलना में अब एक अलग टीम हैं। उन्होंने कहा कि ये टीम एक महान ऑस्ट्रेलियाई क्रिकेट टीम बनने की यात्रा पर हैं। उनकी टीम निश्चित रूप से उस मुकाम पर नहीं पहुंची हैं, लेकिन ये टीम उस यात्रा पर हैं और अच्छी क्रिकेट खेल रही है।

दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे

आपकी पेंशन समस्याओं के समाधान के लिए दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे द्वारा 18 सितम्बर 2024 को अखिल भारतीय पेंशन अदालत का आयोजन

सेवानिवृत्त कर्मचारियों/अशक्तता पेंशनर/पारिवारिक पेंशनर की सुविधा हेतु दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे, बिलासपुर द्वारा मुख्यालय एवं सभी मंडल प्रबंधक कार्यालयों, कारखानों में 18 सितम्बर 2024 को अखिल भारतीय पेंशन अदालत का आयोजन किया जायेगा।

यदि आपको सेवानिवृत्त के पश्चात मिलने वाले बकाया निपटान (पेमेंट ऑफ सेटेलमेंट ड्यूज) से संबंधित अथवा पेंशन भुगतान संबंधी कोई शिकायत है तो आप अपना अभ्यावेदन दो प्रतियों में निम्नलिखित अधिकारियों को दिनांक 10 सितम्बर 2024 तक अवश्य भेज दें। न्यायालय में लंबित प्रकरण, नियुक्ति तथा अन्य नीतिगत मामलों को पेंशन अदालत में शामिल नहीं किया जाएगा। सेवानिवृत्त सभी कर्मचारी/अशक्तता/पेंशनर/पारिवारिक पेंशनर जिन्हें इस संबंध में अपने आवेदन पत्र प्रस्तुत करने हैं, वे अपने सेवानिवृत्ति के अंतिम पदस्थ मंडल/ इकाई के वरिष्ठ मंडल कार्मिक अधिकारी/वरिष्ठ कार्मिक अधिकारी/वर्कशॉप एवं सहायक कार्मिक अधिकारी को सीधे ही आवेदन भेज सकते हैं।

नोटः– आपकी सुविधा के लिये दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे,प्रधान कार्यालय बिलासपुर के वरिष्ठ कार्मिक अधिकारी और वरिष्ठ मंडल कार्मिक अधिकारियों के पते नीचे दिये जा रहे हैंः–

प्रधान मुख्य कार्मिक अधिकारी, दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे, प्रधान कार्यालय, बिलासपुर (छ.ग.)–495004	वरिष्ठ मंडल कार्मिक अधिकारी, मंडल रेल प्रबंधक कार्यालय, किरसवे, दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे, प्रधान कार्यालय, नागपुर (महाराष्ट्र)–440001	वर्कशॉप कार्मिक अधिकारी, डब्ल्यू.आर.एस. रायपुर, दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे
वरिष्ठ मंडल कार्मिक अधिकारी, मंडल रेल प्रबंधक कार्यालय, बिलासपुर (छ.ग.)–495004	वरिष्ठ मंडल कार्मिक अधिकारी, मंडल रेल प्रबंधक कार्यालय, दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे, न्यू. डी.आर.एम. कॉम्पलेक्स खमतराई, रायपुर (छ.ग.)–492008	वर्कशॉप कार्मिक अधिकारी, वर्कशॉप मोतीबाग नागपुर दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे
उप मुख्य लेखा अधिकारी (सा.) दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे, बिलासपुर (छ.ग.)–495004	मुख्य सुरक्षा आयुक्त, आर.पी.एफ विभाग, दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे, प्रधान कार्यालय, बिलासपुर (छ.ग.) – 495 004	सहायक कार्मिक अधिकारी, (जीएसडी) रायपुर दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे
		उप मुख्य कार्मिक अधिकारी (निर्माण) कंस्ट्रक्शन कार्यालय बिलासपुर (छ.ग.) – 495004

अखिल भारतीय पेंशन अदालत – 2024 के लिए आवेदन पत्र का प्रारूप

01	पी.पी.ओ. क्रमांक –	07	अंतिम वेतन :–
02	सेवानिवृत्त कर्मचारी का नाम –	08	सेवानिवृत्त/अशक्तता/मृत्यु का दिनांकः–
03	पदनाम (सेवानिवृत्त/अशक्तता) पेंशनर/पारिवारिक पेंशनर के समय) :–	09	मोबाईल/टेलीफोन नंबर :–
04	मंडल/यूनिट का नाम (अंतिम कार्यस्थल) :–	10	पत्राचार के लिये पता :–
05	विभाग :–	11	सेवानिवृत्त/अशक्तता पेंशनर/पारिवारिक पेंशनर के शिकायतः–
06	मंडल/कार्यालय :–		
	(नोटः– पी.पी.ओ. एवं सेवा प्रमाण पत्र की छायाप्रति संलग्न करें।)		
12	आवेदक का हस्ताक्षर :–		

(कृपया इस संबंध में विस्तृत जानकारी हेतु हमारी वेबसाइट : www.secr.gov.in पर मिलें)

प्रधान मुख्य कार्मिक अधिकारी
दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे, बिलासपुर

CPR/10/PR/205

South East Central Railway @secrail

RO No:PC/50337 D.24-08-2024

अपने शब्द सोच-समझकर चुनिए,प्रभास को जोकर कहकर घिरे अरशद

प्रभास स्टारर कल्कि 2898 एडी इस साल की सबसे सफल भारतीय फिल्म रही, जिसने बॉक्स ऑफिस पर करीब 1100 करोड़ का कलेक्शन किया। बॉक्स ऑफिस पर कोहराम मचाने के बाद हाल ही में फिल्म को ओटीटी पर रिलीज किया गया है और वो भी एक नहीं दो-दो प्लेटफॉर्म पर। कल्कि 2898 एडी को प्राइम वीडियो और नेटफ्लिक्स पर रिलीज किया गया है, जिसे दर्शकों से जबरदस्त रिस्पॉन्स मिल रहा है। फिल्म को दर्शकों से लेकर फिल्म क्रिटिक्स और यहां तक कि सेलेब्स से भी जबरदस्त रिस्पॉन्स मिला, लेकिन पिछले दिनों अरशद वारसी ने फिल्म में प्रभास के किरदार को लेकर ऐसी बात कह दी कि वह तब से लेकर अब तक साउथ सिनेमा के सेलेब्स के निशाने पर हैं। पिछले दिनों एक इंटरव्यू में अरशद वारसी ने कल्कि 2898 एडी में प्रभास के किरदार भैरवा के लुक की तुलना जोकर से कर दी। फिल्म पर अपना रिव्यू देते-देते अरशद वारसी ने जो कहा, वह साउथ इंडस्ट्री के सेलेब्स को बिलकुल पसंद नहीं आया और एक बार फिर साउथ वर्सेज बॉलीवुड की जंग शुरू हो गई। इस बीच फिल्म के निर्देशक नाग अश्विन ने भी अरशद वारसी के बयान पर प्रतिक्रिया दी और इसकी कड़ी निंदा की। नाग अश्विन ने सोशल मीडिया के जरिए अरशद वारसी के जोकर वाले बयान पर प्रतिक्रिया दी और बॉलीवुड वर्सेज टॉलीवुड मुद्दे पर भी अपनी राय रखी। इसी के साथ उन्होंने इस ओर भी इशारा किया कि कल्कि 2898 एडी के बाद कल्कि 2 में प्रभास और भी दमदार अवतार में दिखाई देंगे। नाग अश्विन ने एक ट्वीट किया है, जिसमें उन्होंने इस पूरे मुद्दे को लेकर अरशद वारसी पर निशाना साधा है।नाग अश्विन ने अपने ट्वीट में लिखा- चलिए, ज्यादा पीछे की ओर नहीं जाते हैं...

अब उत्तर-दक्षिण या बॉलीवुड वर्सेज टॉलीवुड नहीं.. बड़ी तस्वीर पर नजरें रखते हैं.. यूनाइटेड इंडियन फिल्म इंडस्ट्री.. अरशद साहब को अपने शब्दों को सोच-समझकर चुनना चाहिए था, लेकिन यह ठीक है.. उनके बच्चों के लिए बुजी खिलौने भेज रहा हूं। और प्रभास को कल्कि 2 में सर्वश्रेष्ठ दिखाने के लिए कड़ी मेहनत करूंगा। दरअसल, हाल ही में एक इंटरव्यू में अरशद वारसी ने कल्कि 2898 एडी में प्रभास के लुक की तुलना जोकर से कर दी थी। उन्होंने कहा था कि प्रभास एक जोकर जैसे लग रहे थे। मैं मैड मैक्स देखने की उम्मीद कर रहा था। मैं वहां मेल गिब्सन को देखना चाहता था। तुमने उसे क्या बना दिया यार। क्यों करते हो ऐसा, मुझे समझ नहीं आता है। अरशद के इसी बयान के बाद सुपरस्टार नानी से लेकर सुधीर बाबू तक ने अभिनेता को निशाने पर ले लिया।

न्यायालय अनुविभागीय अधिकारी (रा)/सक्षम प्राधिकारी, सूरजपुर, जिला-सूरजपुर (छ0ग0)

रा0प्र0क्रं0 /अ-2/2023-24

–:: ईश्तहार ::–

एतद् द्वारा आम ग्रामीण जन ग्राम-तिलसिवां को सूचित किया जाता है कि आवेदिका श्रीमती सुशीला भगत पति अमर साय भगत , जाति उरांव निवासी ग्राम तराईनी, तहसील सामरी, जिला बलरामपुर (छ0ग0) द्वारा उनके स्वत्व एवं अधिपत्य की भूमि ग्राम तिलसिवां, प.ह.न. 07 रा.नि.मं. बसदेई, तहसील सूरजपुर स्थित भूमि खसरा क्रमांक 844/4 रकबा 0.06 में से रकबा 0.03 हे0 कृषि भूमि को व्यवसायिक प्रयोजन में व्यपवर्तन किए जाने का आवेदन पत्र प्रस्तुत किया गया है। अतएव इस संबंध में जिस किसी भी व्यक्ति को कोई आपत्ति हो तो वे स्वयं अथवा किसी विधिक प्रतिनिधि के माध्यम से दिनांक 27.08.2024 को न्यायालयीन समयावधि में उपस्थित होकर दावा/आपत्ति प्रस्तुत कर सकते हैं। उसके पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर कोई विचार नहीं किया जावेगा।

आज दिनांक 12.08.2024 को न्यायालयीन पदमुद्रा एवं मेरे हस्ताक्षर से जारी किया गया।

सील

विशेष कर्त्तव्याधिकारी
भूमि व्यपवर्तन,सूरजपुर

संपूर्ण भारत के लिए एक प्रकाशन

घटती घटना

राजधानी समाचार

अम्बिकापुर, रविवार 25 अगस्त 2024

तुगलकी फरमान के विरूद्ध कलम बंद अभियान का 54 वां दिन

छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री के विभाग जनसंपर्क के द्वारा स्वास्थ्य मंत्री श्री श्यामबिहारी जायसवाल के विभाग के संबंधित समाचारों के प्रकाशन पर जनसंपर्क संचनालय के आयुक्त सह संचालक आईपीएस श्री मयंक श्रीवास्तव के मौखिक आदेश पर घटती-घटना के शासकीय विज्ञापन पर रोक लगाकर दबाव बनाने से लोकतंत्र के चौथे स्तंभ के मूलभूत हक पर कुठाराघात के विरूद्ध कलमबंद अभियान...के पन्द्रहवें दिन भी केंद्र सरकार से अनुमोदित विज्ञापन नियमावली के आदेश को ठेंगा दिखाने वाले जनसंपर्क विभाग के द्वारा कोई प्रतिक्रिया नहीं देने के पीछे किसका हाथ...

क्या छापें स्वास्थ्य मंत्री जी?

क्या छापें आयुक्त सहसंचालक आईपीएस मयंक श्रीवास्तव जी?

क्यूं न लिखें सच?

माननीय मुख्यमंत्री श्री विष्णुदेव साय जी 25 जून को संविधान हत्या दिवस छत्तीसगढ़ में नहीं मनाया जायेगा क्या? इमरजेंसी पर बात...हर बात पर आरोप...तो छत्तीसगढ़ में एक आईपीएस के तुगलकी फरमान पर आदिवासी अंचल से विगत 20 वर्षों से प्रकाशित अखबार पर क्यों किया जा रहा है जुर्म...? क्यों कलमबंद आंदोलन के लिए विवश होना पड़ा एक दैनिक अखबार को...?

छत्तीसगढ़ सरकार घर तोड़िए या कार्यालय तोड़िए...इंकलाब होता रहेगा इंसाफ तक... अब तो बताईए मुख्यमंत्री जी...क्या छापें?

घटती-घटना के स्नेही पाठकों,विज्ञापनदाताओं एवं शुभचिंतकों को हो रही असुविधा के लिए खेद है...

संपादक :- अविनाश कुमार सिंह

प्रकाशक,मुद्रक,स्वामी अविनाश कुमार सिंह के द्वारा सांई ऑफसेट प्रिंटर्स,नमनाकला,संत हरकेवल विद्यापीठ के पास,अम्बिकापुर से मुद्रित एवं प्रकाशित। संपादक-अविनाश कुमार सिंह*(पी.आर.बी.कानून के अनुसार संपूर्ण संपादकीय दायित्व के लिए जिम्मेदार)
RNI Reg.No.CHHHIN/2004/15050मो. 94062-23001,98265-32611,Email:ghatatighatana11@ gmail.com,Website:www.ghatatighatana.com, (सभी विवादों का न्याय क्षेत्र अम्बिकापुर न्यायालय मान्य होगा)